**Indian Streams Research Journal**
**Vol - I , ISSUE - III [April 2011 ]** **ISSN:-2230-7850**

# हिंदी भक्ति काव्य की प्रासंगिकता

**भगवान आदटराव**

संतोषा भीमराव पाटील महाविद्यालय ,मंदुप, तह. द. सोलापुर, जि. सोलापुर.

## सारांश –

भूमण्डलीकरण, उदारीकरण, उन्नत प्रौद्योगिकी एवं सूचना तकनीकी के युग में गुमराह होते जा रहे मानव समाज को पथ प्रदर्शित करें, यह चिंता का विषय है। यद्यपि आज हमने हर क्षेत्र में क्रांति की है, पर हम मानव मन तथा उसकी भावना समझने में पीछे रहे हैं। घोर उच्छृंखलता, बढ़ता यौनवाद, खुला सेक्स, भ्रष्टाचार, प्रदूषण तथा आतंकवाद से ग्रस्त युग में सबसे बड़ी चुनौती साहित्य के सामने खड़ी है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब-जब समाज पथभ्रमित हुआ या अपसंस्कृति हुई तब तब साहित्य ने उसे संभाला है। साहित्य का उद्देश्य समाज को राह दिखाना है। साथ ही समाज को सुसंस्कृत करने का काम साहित्य करता है। धर्म, यश, हित, उपदेश और पुरूषार्थ-चतुष्टय काव्य के प्रयोजन हैं। इस दृष्टि से विचार किया जाए तो वर्तमान समय में भी साहित्य का योगदान महत्त्व पूर्ण है।

## प्रस्तावना-

घर में बुजुर्गों का महत्त्व पथ-प्रदर्शन के कारण ही बढ़ता है। वर्तमान युग में भी हिंदी साहित्य के इतिहास का विचार किया जाए तो भक्तिकालीन साहित्य पथ-प्रदर्शन का काम कर रहा है। सभ्यता की दृष्टि से आगे तथा संस्कृति की दृष्टि से पीछे रहे समाज को घुटन, पीड़ा , व्याधी आदि की अनुभूति देना स्वाभाविक है। हर्षोत्साहित समाज, जो आपाधापी कर रहा है, जीवनयापन के लिए मारामारी तथा भागदौड़ कर रहा है। अपने 'अस्तित्व' के लिए इसमें प्राण फूँकने का काम भक्तिसाहित्य जरूर कर सकता है।

भक्तिकालीन परिस्थिति तथा आज की परिस्थिति में भी कुछ साम्य जरूर है। भारतीय समाज में वर्ण एवं जाति व्यवस्था का वर्चस्व अति प्राचीन काल से रहा है। समाज दो भागों में विभक्त है। एक ओर पूंजीपति, फॅक्टरियों के मालिक, अभिजात्य वर्ग है, जो वैभवसंपन्न ऐशोआराम में जीवन गुजार रहा है, दूसरा वर्ग किसान, मजदूर तथा छोटे धंदों में लगी जनता है। बढ़ती हुई बेरोजगारी तथा किसानों की आत्महत्या का चित्र आज भी समाज में है। तुलसीदास ने कहा-

खेती न किसान को, भिखारी को न भीत बली।
बनिक को बनिज, न चाकर को चाकरी।
जिविकाविहीन लोग सिद्यमान सोच बस कहैं।

संकुचित राष्ट्रीय भावना तथा सामाजिक विषमता से तत्कालीन समाज भी ग्रस्त था तथा आज भी वही परिस्थिति है। भक्तिकालीन कवियों ने विभिन्न संप्रदायों में विभक्त समाज को एकछत्र में लाने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। विद्रोह, द्वेष से भरे समाज में प्रेम, एकता तथा शांति के बीज तत्कालीन कवियों ने बोए। उसका आस्वाद ही आज की समस्याओं का समाधान है।

आज के परिप्रेक्ष्य में कबीर को पथ प्रदर्शक कहना उचित होगा। वे उच्च कोटि के भक्त होने के साथ ही जागृतचेता थे। वैसे तो आज पूँजीपतियों को अपने परिवार के बारे में विचार करने की फुरसत नहीं मिलती। रोटी से पेट भरने के बदले नोटों से 'पेटी' भरनेवाले ने पूँजीपतियों को कबीरदास साचने के लिए मजबूर करते हैं-

''साइं इतना दिजिए, जामें कुटुम समाय।
मैं भी भूखा ना रहूँ, साधू न भूखा जाय।।

''यह कब होगा!'' धान को जरूरत से ज्यादा महत्व देने के कारण ही टूटते परिवारों की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ रही है। कबीर परिवार में एकता लाना चाहते थे, साथ ही पूरा समाज एक छत्र में लाना उनका उद्देश्य था। शायद इसीलिए कबीर को बेचैनी सता रही थी-

''सुखिया सब संसार है, खाये अरू सोवे।
दुखिया दास कबीर है, जागे अरू रोवे।।''

नामदेव के अनुसार भी धान का अधिक संचय व्यर्थ है, जिससे द्वेष बढ़ता है। लौकिक व्यवहार में दिखाई देनेवाली घटनाओं का उदाहरण देकर वे कहते हैं-

''जिए मधुमाखी सचै अपार मधु लीनौ मुखि दीनी धारू।
गए बाछकट सचे खीरू गला बांधि दुहि लेहि अहीरू।।''
धान तथा ज्ञान से भी प्रेम महत्त्वपूर्ण है, जिसका व्यापक विचार कबीरदास ने किया है-
''पोथी पढि-पढि जग मुआ पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम के पढै सो पंडित होय।।''

रहीम भी प्रेम के उपासक थे। रहीम ने कहा है-

''रहिमन धागा प्रेम का मत तोडो चटकाय।
टूटे से फिर ना मिले, मिले तो गांठ पड जाय।।''

यह व्यापक प्रेम सामाजिक विषमता तथा विद्वेह मिटाकर एकता बढ़ा सकता है। आतंकवाद को मिटना है तो आपसी प्रेम अनिवार्य है। कबीर का प्रेम 'वसुधैव कुटुंबकम्' का प्रेम है। आधुनिक युग में साक्षर मानव जातिभेद को खाद-पानी दे रहा है, पर कबीर वहाँ चोट करते हैं-

''जो तू बांभन बंभनी जाया। आन बाट है क्यो नहिं आया।
जो तू तुरक तुरकनी जाया। तो भीतरी खतना क्यों न कराया।।''

साथ ही हिंदू मुस्लिम धर्म पर होनेवाले संघर्ष पर उन्होंने प्रहार किया-

हिन्दू कहै मोहि राम पियारा। तुरक कहै रहिमाना।
कबिरा लाडि-लाडि दोए, मुए। मरम काहू न जाना।।

जब रक्त, मल-मूत्र, चाम व मांस सबमें एक जैसे है तो हम संघर्ष क्यों करे? 'लोका मति के भोरा रे' ऐसा इसीलिए कहा गया है कि, हम आज भी सामाजिक विषमता, भेदभाव, सांप्रदायिक तनाव में गुजर रहे हैं। आतंकवाद मिटाने के लिए 'रामचरितमानस' का अनुकरण योग्य है। तुलसी के राम "बरी के बेर खाते हैं। कपट से बातें करते हैं तथा हनुमान को गले लगाते हैं। उत्तरकाण्ड में तुलसी के विचार विश्व के लिए अनुकरणीय है। रामराज्य हो तो कोई किसी से द्वेष नहीं करता। दैहिक, दैविक तथा भौतिक ताप अपने आप ही मिटते हैं-

''दैहिक, दैविक, भौतिक तापा, रामराज्य नहिं काहु हिं व्यापा।''
नहीं दरिद्र कोउ दुखी न दीना, नहिण कए अबुधान लच्छनहीना।।

'मानस' मानव जीवन के व्यापक सौंदर्य और उनकी मर्यादा का द्योतक है। लोकसंग्रह का विचार करते हुए वे आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, आदर्श पति, आदर्श राजा, आदर्श सेवक को समाज के सामने प्रस्तुत करते हैं।

भक्तिकाल के कई इस्लाम कवियों ने भी राष्ट्रीय एकता के विचार व्यक्त किए हैं। शायद इन्हीं से प्रेरित होकर मैथिलीशरण गुप्त के राम भूतल को स्वर्ग बनाने आते हैं। मराठी संतों ने भी 'हा विचि माझे घर' कहा है। हर भक्त कवि ने भेदभाव मिटाकर समूचे समाज को एकता के रूप में देखना चाहा है। आज के परिप्रेक्ष्य में उनके विचार महत्त्वपूर्ण है।

बढती हुई आबादी, भयावह रोग तथा उदासीनता से समाज ग्रस्त है। 'उदंड झाली लोकर' कहते हुए मराठी संतों ने भी जनजागृती का काम किया है। कबीर ने माया से सावधान रहने का संदेश दिया है। आज एड्स, जैसे भयावह रोग 'नरक का द्वार' ही तो है। शायद इसीलिए संतों ने कहा है-

''परनारी प्रसन्न भई क्या कुछ दे सके और।
मूत्रपात्र आगे धरै, यहि नरक का द्वार।।''

परनारी या वे"या का भोग एड्स को आमंत्रित करना है, यह बात मोक्ष रूप से भक्तिकालीन कवियों ने कही है।

आजादी मिलकर पैंसठ साल पूरे हुए, फिर भी भारत में अंधश्रध्दा हावी है। धर्म के नाम पर ठगनेवाले पोंगा पंडित तथा इनके शिकार आज भी समाज में है। बाह्याडंबर तथा अंधश्रध्दा का विरोध भक्त कवियों ने किया। आज भी लोग जो पुण्य कमाने हेतु तीर्थयात्रा करते हैं। दुर्बल को सताकर तीर्थयात्रा करने से थोड़े ही पुण्य मिलता है-

''दुर्बल को न सताइए, जा की मोटी हाय।
बिना जीन की स्वास से, लोह भस्म हवै जाय।।'' (कबीर)

महल में रहनेवाले फोन, फैन, मोबाईल, ए.सी. जैसी सुविधा का भोग करते हुए भी उदासी तथा घुटन का अनुभव करते हैं। कबीर के विचार आज भी मार्गद"र्क है-

''गोधन, गजधन, बाजिधन, और रतन धन खान।
जब आवै संतोष धन, सब धन धूरि समान।।''

मांसाहार बढ़ रहा है। कबीर के विचार सुनकर सुधार जाए तो जगत का कल्याण होगा। वे कहते हैं-

''बकरी पाती खात है, ताकि काढि खाल।
जे जन बकरी खात है, तिनको कौन हवाल।।''

आज बूचड़खाने की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ रही है। पर सवाल यह है कि हमें चाय के लिए दूध मिलेगा कैसे? घी, मक्खन, दही की बात तो दूर रही। आज जरूरी है कबीर जैसे संतो के विचार अपनाने की। एक स्थान पर कबीर फटकार लगाते हुए बाह्याडंबर पर प्रहार करते हैं-

''भगवा पहिऱ्या तिलक लगाया, लंबी माला जपता है।
भीतर तेरे कूफर कटारी यो नहि साई मिलता है।।''

तथा जीवितों की उपेक्षा कर मूर्तिपूजा करनेवालों पर नामदेव प्रहार करते हैं-

''पाहन आगे देव कटीला।
प्राण नहीं बाकी पूजा रचीला।।''

उससे बेहतर है कि गरीबों की सहायता करें था उनके साथ आत्मीयता का व्यवहार करें, क्योंकि - ''घट-घट वह साई रमता, कटुक वचन मत बोल रे।'' दान के संदर्भ में कबीर, तुलसी, रहीम, नानक, नामदेव के विचार आज भी मार्गद"र्क है। 'पद्मावत' में जायसी कहते है कि एक देने से दस गुला लाभ होता है। दानी दोनलोंलोकों में पूज्य बनता है। पर्यावरण की समस्या बढ़ रही है। जायसी ने हिंदू परंपरा का वर्णन करते हुए नदी, पर्वत झरना, वृक्षों का महत्त्व स्पष्ट किया है। सिंहलद्वीप की प्रकृति को देखते ही स्वर्ग का अनुभव होता है। यहाँ चारों ओर आमकुंजों का सघन आच्छाद है। पर्यावरण के महत्त्व को देखते हुए कवि ने प्रकृति की व्यापकता, सघनता, चिरंतनता तथा स्वर्गीय रमणीयता की कल्पना की है। मानसरोवर के पास जाते ही साधक भूख-प्यास भूल जाता है-

''देखि रूप सरोवर कै गई पियास और भूख।
जो मरजिया होई तहँ, सो पावै वह सीप।।''

तुलसी तथा सूरदास के काव्य में भी प्रकृति की झाँकी मिलती है। रसखान तो प्रकृति के उस रूप को पाने की इच्छा करते हैं।

प्रकृति के इस महत्त्व को देखकर इसे बढावा देने की प्रेरणा हमे जरूर मिलती है।

प्रदूषण में ध्वनि- प्रदूषण भी है। पाश्चात्य संगीत, कनफट आवाज, बेसूर आवाज के कारण फेफडी की बामारी तथा मानसिक रोग बढ रहे है। परंतु भक्तिकालीन छंद तथा राग आज भी स्वास्थ के लिए हितकर है। सुना गया है कि प्राचीन संगीत में वर्षा कराने की ताकत थी। मनोविकार में योगा, प्राणायामक महत्त्व बेजोड है। कबीर ने कहीं- कहीं योगा, प्राणायाम, इडा, पिंगला, के उदाहरण दिए है। आज रोज सुबह दूरदर्शन में योगा तथा प्राणायामके कार्यक्रम प्रसारि किए जाते है। अतः शारिरिक तथा मानसिक स्वास्थ के लिए कबीर ने भी वही संदेश दिया है, जो आज आसाराम बापू तथा रामदेव बाबा जैसे योगी देते है।

हमारा कर्तव्य बनता है कि प्रगति के पथ पर बढते हुए हम प्राचीन साहित्य को न भूले। एक हाथ में शस्त्र (विज्ञान) हो तो दूसरे हाथ में शास्त्र (भक्तिकालीन विचार) अवश्य हो तभी जीवन सुखी बनेगा और सार्थक होगा।

**संदर्भ :**

1) कबीर : कवि और युग - डॉ. के. श्रीलता
2) मध्यकालीन साहित्य विमर्श - डॉ. सुधा सिंह
3) धर्म-दर्शन की रूप रेखा - डॉ. हरेंद्रप्रसाद सिन्हा
4) मध्यकालीन भारत - डॉ. सतीश चंद्र